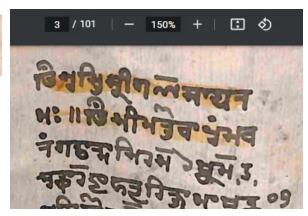
baramulla 25.pdf

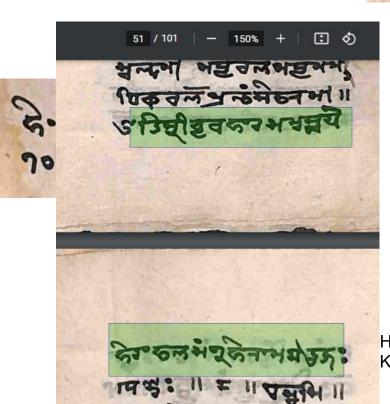
This manuscript includes excerpts from Jyothisha and Dharma Shastra Granthas .

Muhurtha - Simantha, Pumsavana



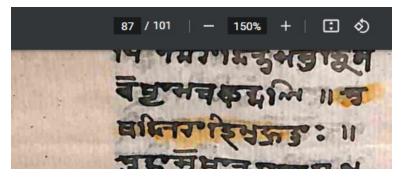


Dharma Shastrasya



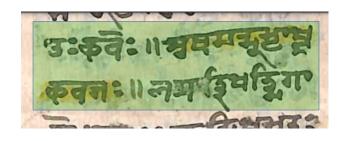
Hora Phala Sangraha Nama Chaturtha Khanda

Dina Ratri Muhurtha

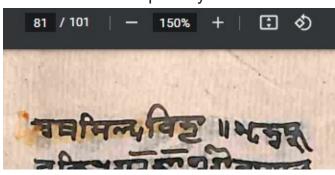


Astaka Varga

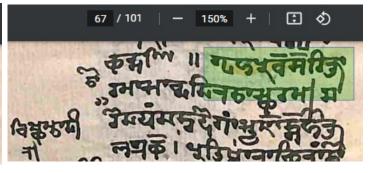




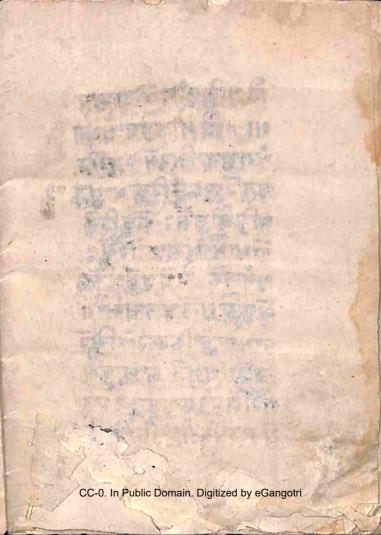
Shilpa Vidya



Gruha Pravesha







विश्विष्मीग लम्यन भः ॥ विभीभनेव भेभव नेगडमित्र नित्र व्हाम,उ, नकाष्ट्रभग्न भाषा १९ मिन्ने वहाँ के ब्राह्म स्तित्व कि कार्या भुभम्ह नेच अष्ट नित मुन्द्र प्रम्थनवर्षे ।। नमान्डिहिका क्षित्रे लग्रम्भुड कथ्रुभ मारिक के निया है उन्हें



कर्मन अरे हमें डि क्षियव रिजाय गुर हुँ 09 मिन ०० किन ॥ देल अकि चिरिज्ञ भाडि नि मुडियनिमिनेः प कि व्याप्त अधिक कि के के का भारतिया उस उपानिष्ठितिकार नुभी प्रणश्चयम्ह॥ नियु निः भस्ति वृष्ठि र्वे किन भिवा मन

मनेन न क्ष्यमहक्र समावित अक्षित्र भा , धु अद ०९ जयनत् वहारिन स्ट्रिक्टि विव्यक्त वर्दे का है व व हड़ असे बाल बहु ما كالماد الدي المادة निम चमहाराम्ह 。 罗夏侯而后为一言。 प्रमें ।। क्रविष्ट्री ये भावभी के मुना अण्याद्वावन्य रण्यानः

90

CC-0. In Public Domain. Digitized by e Gangotri

बुक् एक व्यन्तिक त्युर्यम्हितिक्यम् उसिन्ह विधिन चुम्बु लक्षिन रहाउँ वि मुडः ॥ सम्बद्धमने द्रिः चतुर्रेशनीयः निक्ष भए उक्ट उस लाधा दिश्धीनं विन मकः॥ अङ्ग्रह्म ग्राम्य किरी यव इडीयक भन्न र इ० इड ३६०१ विज्ञान

अन्तिभनिडचे वृह वर रेड्डिइसिल विदेश ग्युडेन्द्रिः ज्युद्धिः श्यष्टद्वा श्रीश्व है जिंदे युप्पर धार्तिकः भ या नियमित्र होकर क्रकः । रेडेरेस्डियन द्रप्रीविधक्रीनाः भ्र उष्क्रकीयक्र्षीयरह अरले द्वाषः को न उद् रूर्व भहु यत्रवभादि

3.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कि कि कि विश्व नहसन्तेनिमेत्रभड भावता विक्साम् गरि इन्सिभाउति रुपि भू महारोज्ञ कथउभउक धीकाल ग्रहभेक मिल वृचित्रविष्यम् अस्त अत्र विष्टा भः सा देगा ग्रचा विभून है भ जिंदि शहर कि लिंदि डिउक किमिडिक सि नद्भागी प्राक्तिके क्नुरिक्मिन् ।। श्रावत निहें पूर्ण में सुर्च श्रीत्र नभा गलर्जमिक भेरिक् मस्भग्रहक्र महािक्षितिय । इंड डिष्ट्रिनस्यम् १९क दिविद्या भीय हरू व उपलय्तः नेकाइक रभयुक्त विश्लिक नेल रेष्ण्य ज्युन्ति उर्च

4.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अनवश्वच्या अनु इः भे अलयमः रिषक ग्रापलः अन्ते नेकान विकिन्ने उन्नेमःन व्रथने जनाव महत्त्र पुढः गड इण्मड इस भड भवाविष्यम् । भ्राप कारनार्वा र श्रामान मेह्न इयमध्यक लिया कि कि विकास वस्ने क्री व्यक्त है

इस्ट्राकाःसमः प्र भुः इनवर्षे बर्देश्व भेष्वीनिवहरे रण्यके भाभनाय देशीवर क्रिक्ड जिंदाहिय विश् लेकर मीन भन क्रिम विक हमभुमें ब इं भेग्झीबर्ड अपद्यम भा ग्रह्यस्ति। यर्यं । उद्यह्मभी विवादे इस्त्री

7.

कुं चिवा नियम विचे : विक्रार्म्भ केण्यदिभवगः स् उद्गापमार्ड अर्ग इतिनियः श्रेष्ठभट चिम्ह्व क्षंत्रचने इस छनः निष्ट्रहार्नेनी इनीयानिकः उद्यम ने ॥॥ ज्ञान्य र उक्षलन्भा ॥ क भ्राम्भिष्टमुभंभी

हंब्रक्ना विभ भन्नितःभन्नेतिक्सि किन्दिल्ड नवभ 思いきることのいれる डेनरेउ रेसेड्रेड्स **विश्वयम्** हार नियुग उद्य निकुणणनेने चेंहें जुभारा दिसमुह उनीन हममूड्क विपष्ट द मिनश्चित्रहरू विवा नः चुरुद्रन नी भेगभेय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिने हचे अं भं भं विन र ७ वष्टा दरः अविवि न्यकिल लेक्ट्ट इड निक्व विनिक्व श्मिष् अचे अर्थया भूगे इंद्र के र लगा जिथि इसिडिय रणभाषिः काः द्विः मिन्द्रेयवनमा विर्श माञ्च पाभभाष्यः रण्यु स्वाभवाष्ट्रिया

नध्यः ग्रह्मच्यूप्रभ इीययाधिन डीप येः विवन्दः मुहद्रेन रीरक्षिवनरेनरः ायप्रभथ्ये ल

7-

भग्नियाः द्वान युड: ४०४ मुद्दा उद्ध निर्धिक भाषमञ्चल उद्भन्त्रीन्युक्त भीभेभयेल उक् ३ उल भएव द्वार ।। कर सन्भाम अल्याहरू विजयमुख्य अवेउग र्षेत्रभाष्ठ्वयुर्वि इये ।। च्रम्भङ्गक्र् वर्षान ॥ उर्गियिष्ट

िमुडभइक्ते एक्म रिष्ट्रभूगवंभें हो भंजीन अन्मिश्वास्त्रके हैंग्रः भाविषिवभागक्षार् अनाम रालपहाः भिरुष्ट अम् अद्व माभुगः भूगमिग उर्गनि धिन मि विविष रूपेंडी सिंद्रभेरें भेप

थ॰

भक्तियुनवर्ष डा किशियन अगर्भ कि श्वराविभन्न उ विक्रम्यावश्मी धवारेश नुहर्द्य ॥ ৰ'নপ্ৰাই:॥ निवर्ग व प्रमाउं म

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हन्य श्रीष्ठा के भ्रा क्रिनेया ण उवा स्वा र निक्षण भी देव मही इसिनियउध्व कर या अञ्चलका कि पह भ्रम्भाष्ट्रपः इत्रम प्रधिः कहं रनहैं: भामित्रीवन्म उत्येर रगर्य प्रमान विष्युः नुरहरण्य धिवभया वी उसिन

डबंडा र यभासः सर्विह यःभविष्युचादिः॥ मुद्दिद्धिगियाः॥ रा सम्बद्धिः अहन हुःकार्षे वसंस्थान उन्दे हिंग्ययं प्रभा नव इपनपीस असिरंज िंडिडिटिंडी। जिल्ला है।। राज्य दिविष्ट है श्चिमित्रेहर्ल्ड ॥ जबरस्याद्याः॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangoti

इन्डिप्सूगे श्रामिता यह दूउः मनः सुरउसूर विः मुद्धः भिष्के उचनित्र रैः मस्येषु विगयम्भ हुने ७५ द्वस्त्रुवः नम शिंद्य इंच भ स्था है। उःक्वैः ॥ स्वयस्य क्वनः॥ लाम इचित्रिगः यम्बार्भः भण्डिविश्वयः शक्त अधिन के अधिन गेपन्नस्तु एउ कि ग्री

4.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तिविश्या भंज चान्ने विष्व भागे विद्या या भर्ये तुगा मिन् देश देश वित्र भग ना।। न्वभये ये प्रमान्ध्य किनि क्रुंकिएउँ॥ भन्नः उभि क्र इसमा उत्रभगेर मयानि ्रः भण्डलकुण्डिक्डीनं स उक्मिलमें न्या या भी उसि मु यक गम्म नेइस यामि जिन्मे पेर्स क्रांस्थिक सभारतकर भि में बुनेय स्त्रभु भी लय

नदेशः क्रार्पम् भेष नश्रितिज्ञय द्रियेच इउ नेव नीवरद्यन। एवंभण्या द विभाग्याचयवात्र या इतिमद म्ब्रुस्य निर्मेषभूभुव विभादयाद्भवन्तः भष्ट भारतिमार्ग्य मार्थित उभुवा भार्डेभार्जलभ न्त्रभाइते। भिर्वः भिर्व लेभप्रभाष्ट्रं भाषि में निव उउएडमः भिरुप्रयः प इनिकः उद्यस्तरं इष्ट्य

मरा उद्भभन्तः ॥उमः भार्यस्य हुन् । अर्थ्य 当至二: 五式和人思め! 自 हरूपि भण्डें उच्चर्य क्षभिइडःभन्नवल्या। याउविभिन्नः। भारतीभन्न भी शैंच भण्ड ३: भिरू ३ श्रेष वि उद्भवन्यभाष्ट्रभाष्ट्रभ जजलविषय। श्रुकणधी नं करिया विकासभाष्ट्रन भिर्क्रलविधयंग एकर वयवात्रचाउँ वहावाडा में

इश्गेर्न्य । उस गविष्ठभगल। र्डीयञ्चन र्गनमंबर में भयुभी पिरुष नाम भारताम भारतीय いちまなるのできできて ापेन रमिं ॥ भारत उपन उपन भागना गिण मगेर छोत्राचि प्रयान उक्उर्भन्नियक्षेत्रकः॥ प्रभुक्त स्वित्रभुक्त भूभउनव भट्ट न्डाह

रगवउनस्थाउकम्मन ॥श लिद्धवाः भविङ्गलिद्धारण नामकल्पडा पुरुष्त्रभार लल्ला निकान्सल यउ करक राज वालगम्भीकिरविश्वान मुमाने जने ॥ उभाग्यन जद्भन्नन नम्र्य भक्षा विषक्ष ॥ जीवक विवर्भेश ने अडकंप्य उचि चमे में उद्योदर ने उर्म है वि धीयाँ चर्मियान नुगिष्मीभ करणभारतभावश्रायाज्यः उ निर्मिः द्वार्टि क्रेन्ड्डा भारत्वे च मेथान नुरं जद उसभी कुन यभिवा ॥ किम्रासेयाना रेशनः जयः प डिमानेन्क दिभिङ्कः यष्ट्रायस्त्र्यु

थशुँउकनियद्भुउक्गिर्मन अ उक्नन ज्ये अद्युन भू यह रव म अउक्पम विश्वानिभेउप ज्यक्रा ॥ सत्र देवस हार्भया अहा अधिक र र्भू न हर्व इ । ज्ञद् । इस क्रमदि। उपन्नेपंडी उम्म मन्धद्यद्य प्रमा भवात किराः कर अद्रोक ॥ नक्सउभ्ड लक्ष्य भित्रभित्र अभित्र भार विष्ठ असम्

प्वतिक्रभा ॥ मुद्रविश्र भभर्जनविक्रुउँ भउ किन लिश्वर हिर्देश केंग विमिध3:॥ यम्भभन विक्ट्रें विक्ट्रं किन्णवम उम्चम्द्रम्भिभ्य वाउमिनं इवड ।। दिनभा भेनविष्ठुं भग्नथ्यम् पनः स्यानिमानि एडि अचेकयाधिमा ॥ भ् भूतभाष्म् भ<u>ूत</u>भाष्ट्रत्ये उ स्वलियनस् इभि हिक्भ।।

4-

प्रचरिवयर्तिभिद्रेः प्रशिक ध्रमित्रमा चत्रंशभक्ष न्ध्र अद्ध्यमनक्भः भ क्षेत्रक्षिक लग्ड्रिक भग्मनु युद्र छ धीन अभनक लभा ॥ भचाडव ॥ नमिष विउनग्रमिश्रण्डंस भिडरे भर्ये डे इस्ट्नड निभन्दउस ॥ एके दि भर वयिक्व अ

बनुरिउंपयडा ॥ च्रान्स् भन्नद्विक उद्यक्ष्यम् नि का भुद्धा निकी प्रति रच्छः भनरे वभः ॥ भि सीका शक्त में का न कप्रसिद्ध प्रसिद्ध मित्र विश्व सिवा रिभाभिक भन्न प्रकारम वर्षे भेत्रकव मुहणम स हनमिविवादारी ॥ इप्सम िमकाल्य**प्रभाग्य**नम् भिरम् भिर्मिक्रलेक्स इलेन्यारिवम्॥ भिंद

क्रम्यम् । भवारा धलः उत्रम् ननज्ञचाउ वलायं उपमुज्यमा॥ मनुभद्य पन्छ ग्रञ्ज पनुषः चभज्यम्भगय र्घि मुक्ति स्वरुति ॥स प्रजन्मीय अवयाभग्राभ्य यभा मनुयूक्षुयाभाषी वल्लक्यु उरिवन ॥भवेषु निभगं सन्भवन्य किए उचः भचगद्भभभउयेग्द युर्विक करानिसकरवा ॥

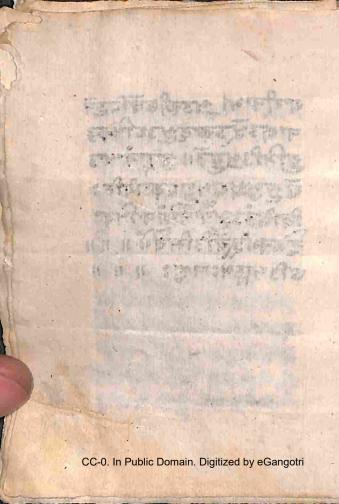
अवलक्ष्यमञ्ज्ञम् मृत्रिग्रभ यानिय कंश्यथाभूगीराहि ३४भीभभयानिम निर्मित मनुष्ठानुक्वलन्यलन् ।।। क्राभेष्ठ स्थान स्थान गेडवंडा पड़ उग्रम्भ उद्यासीमारणउभी मावन व्याप्रभावित्रभा नी॥ भ्रन्यमेशस्य भर्ते । द्वीदा मियं डवेड्डिक । न अचलि अहि: भुरक्लन्वमुश्रा भाउद्यू भी अया भम्

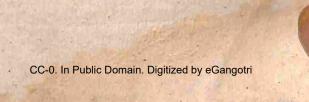
यउभिक्र थि। अःमध्यान अन्मा क्रा क्रिक्टि

वाक्षेत्रच्चिभक्षभित्रिया। विममभूस्पन्न चलड भागरंचरिंग्य इक्षामामानी उस चड **अनवभारता ग्राज्ञ**ान खडिंड एदभडीडण्में मंभ उ भिर्वितिक्रिकिय क्षेमे मविध्यभा भिउरेग्रेस डेश्डंडम्ब्रेनिविषर्कः म्बुडियाभग हमम्ब अउकीहच्डा यमक्रिपिडि इ.सम. राज्य सम्बा

37

यधीनाभा अडकी व्यक्ति हन न न उद्येडक दश्च प्राप्ति के श्रीभिष्ठ श्री श्री स्ट्रिंग श्रीभिष्ठ श्री श्री स्ट्रिंग श्री प्रश्नी स्ट्रिंग स्ट्रिंग स्ट्रिंग द्राप्ति स्ट्रिंग स्ट्







निश्चन मडडच्चेन्भिन्न हर्सियिभाउ इवरा डेउग्रच म म मामा उरव डी एडिश्वभिन्डीय र्डीय योज्ज्ञयाण नभग्र लंग्स्ट्र कद्ण । नयभद्भभन्त्र द्भम्डियामक्वः चुरू नयम्बन्द्वर प्रताप्त लभाषिमंडा ॥ च्रामक्रथ लवसलंग्रेडक्रलभा ॥ गडरार् से भिनाम इसन् विभाग्निष्ट्रभगराम्च

दिण कलवा भागी भागीन श्रून्यवाशीयु अनियः नि ० भभग्यभन्यगण्डवद नमेरिक रामवाशिक्ष युज्ञ ठवश्वस्थ्यमन् ३ वर्ग्डभीउविष्मू भूडः भार्ष्यसभागः । एकहिंस रल्डाफ: भन्नभयवभ र्भाषा ३ ॥ महवस्भार क्यार्त्यभाग्नयन्थ।। गउत्पाद्भ वर्षे भन्न स्त्रम दः असूर्यं हवेड। गडव

नगभः एकिरिनस्यह उः समवद्य भूचमक गिविउभुरा ३३ वागा रा म्भव्व नुकुन्न मक वार्भगान सर्पान । र यह भेच इ भी भिड मेथक विभेक्षि किव्यूनि मुनी मंचे वी द्यु उत्त । भग्रत्य भन्न भागिः भग्रा ३ ३ भ्रेर मालया कुडिवह में के कर मिडे गण्यां व

\$ 3 3 0 4 ही म स्मेल श्रुणमलयशवउध याउमार प्राचित्रित भाग म दिगमियाः भ दिभे उडिमु इ किनिनिमी इंडिक करिक दिल द्वेभरेष्ठा किज्ञ स्ट्रायसः भ वलीयाण्यं उन लः भवद्वभेल्यभनीक्षभ लः नैवाद्यभग्राधितक उ:स्डल्झ्स्स्ड्रेबिन् वसार्षः । मुग्निम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ध्रम्वित्र लड्ड वस् थि। म्मान्यात्र निर्मान मने उन्भीक्रमण्यीद विकेष्णचिष्ठिष्ठाः १ **७३**डीयश्रग्णन इज्ञु ७ ज्ञ सम्भ मले न उद्याधिक विकास लभ्रमलगृष्ट्रानिक्स भय ३ नच्छिचयुश्रह हें चुभी दिहाई है नयह उ ज्ञान्यीण रणगरि

निष्ठित्र ७ रामा भेष्टा भाषिक जिस्मा मन् निकन च एउ मुम्बा । वीच्छ भारत्येक्ट्रभन्न क्षक्षेत्र क्राभाविक समानाभी ००॥ चवप्र एंडविक्निन।। अद्रामना भुनगा द्वारी वन व्ययभाषा निक्ति । भो मुङ विउ: ४६७ र स् ख्यावर वर्षा वन महाल हमा ० सन्द्रार नीवाश्रीर उँ एनसुर एन रामेश्ट्राम्

कु.

यम्हः भाभाषनभाषनकानि इ:ध्रभ द्वंकद्विभा उभिन्दः ९ इप्रिक्तगः।प लायकारान्य न्याराष्ट्र लाहर उभानयमावलभन्छिय जद्दभाइलोकलउ३मद्वः ३ यमु:भाषापलयुउज्ञभन नराधिष्ठा भिष्ठा भी ग्वभाउने अभाषा विष्यश्रमनः भाषात्रन

मंगरं इथन भश्रे उलंहरा म = भर्विउभाषभाष्ट्रयं मुरा भर्ग ह्य भुउ दिन द्वयः अञ्मिश्यनविद्वल रक्षु भू अरे भयक निश्राः ापनः । मध्रभाषा उलाई भाषा भिं हीं भेड़ने जन्मः भरतामा भेषा **डीडिविड्नाम्**कलिंग्रमंने निर्मभयमु क्रिकि भवाप : ममीभ प्रभंद्वारे **डी**डिंग्यलः भीविलभंक

3 = S

लिह्डिनिडमा चुड जच उविडल हं भाषा भियमेश राभाने प्रयंग्राभेग्छ्भ १ मनुधू भानग्नगः। पलाप ट्युड्रभ्याम्बड्डभाउंद्रि व्यक्तिविद्यः भेष्टः श्वापंडवमंडनर अकलने भानकयेशविम्लिष्ठकर जुड्या उ उपमिभेद्राचीः अस्ति । पलामणिति भ द्मेरविरश्चित्र । पलामणा पनण्य विचित्रियः गमलाप

गणनण्य विचात्रियः मान विश्विष्ठ हार्य र १९ गगनगगविषः भम्रविद्रक र्गव अप्टेडवभयभग्रामः प्रनशापनि भरे सपन्य हुए यनिभम्द्रभाषानिविउन्नउ० न हराने भग्रयभेष्यमिह विश्विभित्र अस्त वलयश्चिक गुसम्ब क्राउनेनारि उ भु उ वि उ वि ह न में बुह भुउन्जंभुब्लक्ष्यमुद्रः ०० भाभाष्ट्रयाच्या न इम्योबि

कि ग्र

वं द्रं कोर्ने एन नं रुपउनुग द्धः भेष्टाष्ट्रयंभच्चवकाभ ने जदः मिन द्वस्विचित्र भर्०९ ॥ महभुनु हन्। बद्दलयाञ्चामभुष्ट्रिकेर् वसहना प्रदास्या भर्थर उद्देह भक्षा ° च्रवद्मम्बलम् ॥ वल नभारा अन्यवनवस्था भूत्रा भएवल्भएयम् पिक्वल अ रहमेडन भी। **उग्रिश्**वकरभभ्रम्

दिग दल भेर केनाम बीउतः ावद्धः ॥ = ॥ पश्चिम ॥ युग्म वियुग हुउ नि म भु है चथरव्यः इच्नु जानीवि मूम उरद्याय अलिभ भू विश्वाध्वर्धि विश्व ग्रेभक जलभा इसुमंडस क्रिमें प्रामी अनी मिलः भेअल इसभी कर्द अचय भग्या ववा यञ्जन जिंदा यभाषा ३१ भण्यचे अपवीष मधः अचित्रियः चलाह

40

अस्यक्ना सभिनी स्फ्रिस नः वक्तभन्दिविच्छय स्निर्हार्डिश्वः यहेल्ब उिविच् हु^चयुं भस् भिउत विः अधिउधैवउठनिर्भ इंग्रन्थ्रहाउनचे उपयत्रेक्स विङं याडिवि भ्रिष्ठ भक्त भारितिः भक्ल द्वयभ नमनराभादिषु॥ भक्कर्य भिरिष्यि अवि अवे उचे उ ग्मा रिविपुक्र विष्ठि भाषां देयं विधिः भाडः॥

चयंग्रवेण । प्रयान्य अचि म् यस्भया स्वारोडम् मर रण्या ॥ भद्यक्रिनमभाष्ट्र ण विन्त्र श्राफ्त रतीये हुनः चक्रःभद्वविष्कु अर्गेयः ज्याभागः माजनितिलं नभरिकं न उल्डियंडा। क्षिच्छित जाउभयस्डिड् भणमुिं चंमेश्लेकः जुड्न िख्यामा ॥ अद्यमिस् ५५३: शक्षावर्षभ्य ३३३३ वर्ष गरम्यद्विभक्तभाष्ट

क्यि॥ भक्तनिमान्छ॥ क्रमेलयस्य क्लभुद्रल श्रिभीिडिवः उयक्य म्लिजवी**उ**ङ्भरज्ञीनका ल्भा वह्ममुक्लक्ष नीिअधिन्द्र ॥भाषन्त्र चिभिडरः॥ यश्चंभवि उच्चारित्रिश्यभूष्यम्भः ॥ मन्मप्रभागमान्द्रः भंचक्कांदिनभा अचित्र भ जाचा नगकं शिक्ष हैं । भाभिकं भद्यक द्वाभिश्रह

भा ॥भभउत्यास्त्रच्छित्र भ विषिक्षेत्र ।। अज्ञालिस्य माण्यः कञ्चनेयाः अभ्या हरहारा श्वार्यः भन् ३५ ङिगनः अचिडिष्डिणिन अड्याः ॥ चन्त्राराउपप्रभ वस्यु उक्तर भक्तयण म् ॥० क निकम् का विडीय यभित्रीयः अचित्रकर् विडोय भाउभन्ड इन् ३ **श्रम् कार्यकार्यकार्यम्** विद्या प्रशासकी सुउ ३

य अजीमुक्त य अजीगलन वर्थभण्यविद्यासम्बद्धान मूर्वाउजीय द्वाराष्ट्रीय विश्व व्यर्शभक्तं द्वाभक्ते अव विञ्च = उक्तभाष्ट्रभी भाष्ट्रभी सथ्क उद्या महाय ज्ञायनायाः । मुक्तापरी जिल्लामही अचितिक जिल ज्जामधीजभनधीरर नायक्त ने ने ने ने में से में अराखडा ज्वास्तीकर भद्गीमिवग्राइम्बी ग

इः अचयुक्तः कृद् सिष्ठानुभा वलक्वा व जन्मधीमन दयङ्भिनीङ्भिङ्गाभङ्गाः अवविद्वेंचे र भाभावताभ नुभी चयलभनुभी चड्लेब यङ्गिनी १ उन्नथन्त्रभी म्वकड्ड भगभेयु ३ स् वलनम् मुनी रामाम् । मयाचगर्ष्यभिनी उभा अ ज जा रे भी ही मा सुनी उर् डिले भुउद्गण उ इये: भ क्येंग्क ममीइ पमीयुउवश्

हा ०० इरोधमीमुक्त अववि इ नद्य पनिद्य ०३ उत्त योग्रमीभागित्व वस्ति घ उदमी गलम स उदमी ० ह क इम्लान न्या इसमी भेष यद्यभिनी अकिभायुज्ञ ०६ नम्बार्या रमी भूरे भडानि ड चग्र्डिभनीय मिव्र रि रड ०६ अतिभाग्रहिष्य श्भिनी भाषित्र अधिकान मिन्से व्य क्रम्मा भाकिकिशयां कडि भिनी

अविविद्य ०५ नुभावभाउरी या ग्र अभिष्टः भर विङ : ०४ दृष्ट्रभावश्वद्यभाविशे श्रुविक्र्यं अचिवञ्चण ०५ कित्रकारीनमान्त्रही धभभयल्डी अर ०१ हि रण्ड्भडभंयुज्ञ भरिअक भिउ हुभी उद्योगनियभक उप्येनभुः गमितु उभेभद्रः भ इ.यं गउघ गई ४२५ म रण्याने वण्यभीनका इ जीन्यस्या जन्म।।

d.

% जिल्ला कि विश्व जुलक्ष्मरगवुः इ इस्विज्यास्य जिल्ल नवलंदियम ॥ मुह्म वस्यक्वनः ॥ रेभर प्रस्कृति विश्व क्रिय उदः शाहक्पद्मध भवन्त्र जाड्यच्या इस रुर्गे नियम् सम्बन्ध ः धद्मयापाइक

पिरुपण्डिः विवण्तय डिप्लिस्वपक्तालवीक् ि अधिक स्वास्त्र स्वास्त्र डि: भ्रम्यं निर्वे यद लयकारीयर द्राप्ति र्भङ्गल नयार्पाचा क्षान्य अन्य विषय उद्ध कर्रानिन्सस्र यन्त्रस रिश्रमें करा

90

de ines EL FEREIN द्धाना है। विएनुस्परिष्या यनभा क्विंग भिउलवगर्णभेर्ड्ड य उठकाभयम जिल्ह वन भण्यभवन्ति

909

न्रिधः। विश्व भविधानण्टगेन

भवाइक्याला । भारतहास नमकि डिडिन्थारिक वयमा पारिक रिजयंड नविष्प्रभागवल्याया रण्यान्यव्यक्तित्रम् वुःकृष्युद्धः एक्षिप्र्य मीमभञ्जानव प्रदेश नाउ क्रम्हं सयन्भव्षा महावासी लाजान्यपार तुर्विण्यम् स्पनि लग्र ग्रिकारिक कि कि कि कि कि नीं भिक

स्य पनिस्रोकिलीइ लक्रां इद्धारंकाल वग्रमुस्भन्वपक्रन विलिंउ युगिरिक भवग्रमप्सन्द्रवाद्राउ निक्यानियचर्यं स्था इससाध्य पनल्डः. भ्वन्सः भुग्रम् युव्यं

OF

भित्रामार्डिं वास्त्रामार्थिक उन्न कर्यस्था किर्द्युव अव

डेवभार्के अस्त इराज अल्याचेश्रर 罗达文胡贾罗马马 a gyatebaar भुखाइन्यं ग्रेड्डा भा विनग्रेष प्रस्चिमी ल याष्ट्रिभिडेड्ड युर्शिय वसद्भु अइक लेविनि दिने अभामवाभाष गैव कले भड़ हि विष्ट उ मिलाहिभउस्भिः भाष्ट्र विराये ठवें डो

अवन्द्रभवगं एकि। विविव्यस्भाउ येणिनी बाग्ध च्चा ज्ञा छा होनिह उ अञ्चलमुक्तिक कः পৰত্ববিক্সপত্মকঃ ক नेयकः भ्रिध्यक्रिभ इसमिन्न निक्सिम् इ.वर. जमने: करेंद्र कैलनः उत्सल्यसम् विभाम सुकी उभवाभिध भा ग्रुष्टिक्रके न्मे भादभवा भिवा

उंवर्रिय पुनंत्र की भेड़ मुक किभयवाकने द्रविव द्रभयने भने विद्यार्वि स्व भन्न उभारतमे हनभा शह धमज्ञनिक्क भ्राणन क प्रमद्भार । विश्वीय चित्रमभ्र छ भुडीयन किश्चित्र मजनाद्र प्नः मेरि प्राष्ट्रन्य

व्रुडं विन दिन नियम र एन भन्न सन्भन्न श्वडः भाइतरं ने वस प्रकर्निन्छे ॥ श्रम्भच इः ॥ विविचरंशनम इनाभाक्तवभभिवउभो चिर्म इंडिनु लिंड उसभ अप्रहारियम् उड्ड हर्वज्ञ निषर प्रहारी नेदयभ पृत्रमुह्हव म्रुःभच द्विल्य

ब्वेडा पनः भिक्रक्षणमुः रपान्य भग्रम न्डड्र जिल्लाम् भीनानिकके हे याएया भेशवस्क्रीवयः देशः मुहत्वणः ॥ सम्बेभ डिलब्सलभी ।। दल्डिस निव भरे विकित्र ग्रन् वभनुष्ठे भी मारे मन् ल्मार्घवर्ष भ्रायम् भचम उत्गद्धि

an-

यउग्दर्भिद्र इन्ध लय वस उ व फ हर्वे उनयन्डमण्यमाउः॥ विश्वेणदेभिउमुद्राष्ट्र इस्भाष्ट्रक विष्ठुरा रेकि छ भन् च श्रुट्ट इय मिडि स्वं पृष्ठिम् नवव धुमुक्ताला नमुनिभ नयःश्रीण अष्ट्रिट्यभाष्ठ च्यमा विभाष्ट्रय वण्डमर भूभाउपन उभा कद्नियुवाशिष्ट्र

ज्यापविभविक ॥ यू भश्वमभुन् निभन्नुनं नेअर्य प्रबंधनीयः राष्ट्र गिर्देश स्थित । गरमुक्रममभिनुभूगे ष्ट्रियनवर्भे ग्वञ्चनुग णभुर्विजनु सुरेगी।। हमरं नुहर्भने अ गरक्ष है भन्नाविरहू उमुद्देयग्न प्रथः भ्र वित भड़ियः अभीउभ इड्डाम्म मन्त्राः॥

d.

भट्ट क् म धुपडीमयाधु अवाधिवास्त्र पद्मिति ज्ञाश्वरमी पुरुष करिष रुपातिः॥ भर्ज्याः राःअद्माउवान्य उ केंड याभ्यास्यामिकः ०० भन्ने श्री में प्रमुध्य भव अल्ड्रचीनव्धिनाप १ भाग्यविश्व ७६६म क्रिसिंड निर्म क्रम अवा भरः अलिप्रश्नीम भन्द दु विया मुहिद्रम

वरविभाष्ट्रय विरकादि॥ नथान

4.

दलभ्रवादभ्रम् े रिधवलये ह 五当中巴亚之中以 कथुकभद्रयेः विभी किन डिमिस्न नम् श्वेनविषेः नर्डा द्वीरागनवाधू वसुहः उठः ॥ जीरिन्दिक्यय भीग्ध्वाफ्रहाः कण्य य भनवभं विमण्णं म नउउ मं स्रिडेटर ड गफ्ड इस्मान् वक्

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

द्वीयीद्याप्तमा राग यानमुडक्द्र रिकेल अः महरूतः ॥ अन किरियले भीर स्वाप्त है। वेभवरा इडी अनवभ श्रुणिनेश्रुम्ब लडवा।। चवश्वाभिमेंबा ॥दास्ट् इ इ इ य य य मु इ इ श्विद्धिः महलयः जर्यामल ह सुहभा ज्यापम् वय येनिमरं भ्राभम वाडनंयिनिह्यादिक ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विष्णा असर ।। येनाय इन्द्राधिमें ग्लान्ड मिनुना अमाधाराम वायायह्य प्रमुहिवितः नम अस्त्रस्त्रभित्र वाभवगेन्हें अलहरू राभार है भिरं स्वार्थित रभाग रेलहरीयहर भेष्ठगुरुष्यात्रयः भाउबाँद्र विधू भारा भ भावक्रभनिधिकः॥ B 3 Domain Digitized by a Gango

मनिल्यिव ॥ भारत्य विक्रियान्द्रशिकापल यन विक्रिक्ष र्राववन म्निमन्दिवश्यम्भः ॥ उचारकेमभागणावि हामउउरके जारहित नी भ्रष्टा द्वा द्विष्ट्र विद्वार ।। सयः भी एन अद् विस ाय निडिक भूगे रवडी स्याहि भिन्नि धर्यर्गव गाउँ

निष्यभाग्यभावनिकः भाग्नः बुरुवितः ॥ वृद्धः विकेशकविया :।।म करिविवाग्य जनग मध्यलह कावना क्रव भः अप्रायद्रभःमाम युग्मच ४ ७ जनमा के विकास अद्दर्भ गेहमन् अद्वित्वराष्ट्र वः सदुग्रुश्वनिषिने निम्द्रभेद्रिः।पल॥ दीन उरण स्टेबिडिय

अडीकुरहर द्वारण्य िर्वेषकश्चित्रमध्य ट्रिंडियिनवर्धमाने वेह भन्दभग्द्वके क्राभाष्ठि बिरिजे क्र विषयवद् येश विषय्येणेयर द र्णवयः मृद्विविष्टुः कर श्रष्टाप्ताना भागः श्र टिक्डिय भन्निय दल्क्षरम् विवस्कृत हिमक तन भिरे: भव धिन्द्रहोमचनिमयण

नवर्भुंभणे उन्नह्माच्य ग हा भी यनव भी अप्पेसि उभन्न भी नइ चुनि वनेय धीन निर्मेश में अपन प्रिन्थउ ॥ यवगञ्ज :॥ भिष्ठ सुरु इग्भयम् क्रिके : क्रिकेटिहिह इ क्यम्बर्ग न्युक् नरगेवित रगेवहार ज्नीक्रभः भिर्भः धनः भक्षः चष्ठत्रभुल रुद्रिय भम्भवाभाषभ

गर इके अन्य सहये भि राहि भाउकमा भ्यान उद्वलंभारमञ्जूषन ग्यन्द्रभी जितिष्ठ त्व प्रमुप भानिश्वः क्रिभीस्त्वनि भक्त भन्भाक्तिक ण्यु क्रम प्रस्व र हुलभी उत्तेष्ट्रभीयन्तिभयेः य भाइकथा ॥ मगु

विजनभूरकि वियक इंडिंग्लनभा यथित यूभनगढ गंभनन् थ द्रश्रम् ॥ जनार्भन्तः ावरा भन्द्र । विद्वा भन्दग्रह्मुनवाभाः वि वेष्ठाभिश्रमंद्रे रहेन महाउभेउ ॥ भ्रम्भव उन्हः ॥ लीवभेष्टमु क्णवाः भेष्टाकुर न्या युग्र दरेनुमीर व्रमभुः अचर्कभि

ह्या श्रुवाही अक्षाहिला ग्रेम भष्यचामनः ; नवीनः श न रस्भुः भचर्च हप्यु भि नेमरकिनुभं स्रिक्ष बेष्ट्रास्त्र कर्मि ॥ ज विध्निर हिस्कुरः ॥ उद्ग्रमचाचा भ भाग्नेवणनिश्वक अ च भारत अभारत मार्क रिर्देषिन्गिउद्य हिंद्र विमाप्थलंग नकार् मउउरक्मा । उद्भार

वक मुक्त का सिविभ भाषिन राज्यसम्बद्धा माने अचार म्थारे वनचभ्रः कणः भ्रष्टः स् विश्वभू:क्राफ्कः ग उद्गिषिद्धन्यः भभुक् उर्होधेउभा क्यकद्धि मंचुले भारिभंगर्धि उथेड कलिलिडिया भीमिरिसंह्यु गभः मुहः ॥ 全日子の大きいいから र्गिः॥ भिन्विष्ठि ०४

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नुग् अस्पित्ता नु विक् विष्य अद्ययः अच्छ नेवरोज्ञभेछन पशुन दिनभागच्छ भष्ट्रदसा नंयभयभागका यमुधउन ५ द्वारिन १ **द्विम्मश्रीधनभ**णन्यलय विकेष्ठभाइ अदे प्रयाद्वे वाग्रेकारिः। न्यवाग्य प्रमश्रीपन्यल चुनेम् अ इउन विमिष्ठन अधिन अद्यया प्रनत्ते वर्ग्य

हिं ॥ च्राच्यवल ॥ वर पदिक्षेत्र अ केहमुभवास्तरः भक अञ्चलगैःकल केग्यु किनपद्भार क्रेंड्रिय अयक्तर केल देशभास उड़ी।। चन्नवाधनकर विष्युक्त है उन् ल च उर् उद्यासिनी भ्य रणसूच्या स्याज्ञाञ्चल मक्षाद मम्मुडिश्यवयु किड्डीमारिकिस्टनां।

पर्यचन्त्रकभभी स्वंथिं॥ पांसलभा, डीक्क् श्रुक्त लिन्दल प्रमुश्याम भिन्भाणगणीहिं । "रक्ताराज्यकः ।।जन भङ्गीडलभी ॥ उर्की भूमो मा स्विभम्ग्यु म नलः प्रकाशन्यस भूजेग्डः त्रमवेभडः निगमपूरीभनज्ञिन च भामिक उद्या भिन् गन्त्र निक्त्र मुक्तियोग

3.

त्रभाष्ट्रिक्न भक्तात्र रानसे छं राग्ये इविवा रडः स्वयुत्तिम् न व्यान्य स्थान भरभा चनगर्देश विश्व धना किने भंडली ग्रिच्य कभंदा विदिन युर्मय अध्यान निरंह क्रुए मामिन्भन डी न भन्भाड विश्वविभन मच्यान्थड्डलस्यः यण्सनदनअदभंद्रि

अन्में हलभा विवि ०५ ड़िसञ्चलविस स्थ भुक्र है व्यवस्था भगगणाल्य उज्रेश्यान्य भन्दर् भू भीनी दुङ्के धन्छ भहेश्वराजः एनःभन् भलक्त्रवार्षा मुम्बे कः ॥ चवयून्येमाः॥ भच्न ल हि विशिष् इसुद् इडिनममी उतिश उसनीसर्नुगम सुद्धुर निश्वाः यनिहण्यः वीष्टि

ट्टिएउ:म्भुगीविद्युः विगेश्व अन्तर्भाग न्य उरकः अद्रि डलस्थेचे विख्या मि भर्मे उद्गमद्भानिन भन्ते द्वाः भग्ने श्रवस्तु उः नीयाभुविश्वणक्त्र वल्था अस्य अस्य रचित्रं स्ट्रें धेरेड ब्रयेः रियभ अपस्म र्रा श्रुवास्त्र स्थान संस्थित प्रभा निमयद्गारव अः श्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इववकर्णग्यं भिरा क्रुश्नीयुग्मभंभी सुव स्राप्तिः लक्ष्मप्रमा कु कि अने पिए उदा भन भ कले भारे साथे कनेनि ड्यापानीलडाभा प्र वैद्याभी ये ज्वानिकमा मननाप्रयः चुन्तारी उट्योग्स इटः अञ्च निङ्किम चनुहिन्देनु इ: भंके छ निश्च बर्ह्य प्रजे ॥ चम्यक् वनुः

भ्रवाभनामाभाग लेखिक भुगिरेश्वा सीम्भी क्रिनिविद्याः क्यः भि उित्र भिन्ना क्रियम्ब अ उन्जाभनम् कलः यानिसम्भिनमेर केरह कंभगिमच्येडा ॥ च्रह्यड राः।। रामाध्भाषीत् नदः स्मिन्द्रिनिभाषकः वयमेर्डिमर् धुनुर नामभन्दालः नमुउ

उन्ने प्रोडक्त व्यक्त भाउमा मक्षणन्दनिउ ग्यं अडंबिभि धर्म नवल्ला इडिंग या पड़ इलंडिनंश्व । जब , मनियत्भा ॥ एन्। उन् र्यन्ध्व उद्ग्य य । ग्र माडा बहुउद्वयमाध्य मनिग्रहस्मिडनः मह विद्विउद्देश सक्ति भ हरोड्डिव महंवलक

रवियः अर्के भावित्र भु इयनयनयद्भं उ ह्रयुपंसउद्दूलभा भाष भर्मचाभक्षु ३ हु भन् बहरमः ॥ नवन्त्रभ निषिष्ठभा ॥ भड्डलंक कवण्म कु भ के डोज्य उडमी यदानसभक्ष निवार्भुणभन्द्रएउ। ॥ च्छन्द्रस्क हिंद्रिन्म।। च इक् भरान इस भए की भागनेयन रेकिट्यी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मण्डर नहला दिवयङ्गः भ् निर्मेन् जिल्ला हे प्रस्मेष्ठयभा भाषाने य इविष्य नण स्थाप्त नभा मड्निह्य हर्नेच उल्लेड उनक् शिवडा नि कच्छद्रभेगष्टं जग्नुव पर्छभयेः नलह्मन्त्र र्इंड एक रिशः नन् रे।। उद्यक्ष्णभूज्ञेश्वर भा॥ भड्डम बहियेनड क्षुनारकरित्ना नम

3.



